सत्रिया नृत्य

//

सत्रिया नृत्य (असम)

- प्रस्तुति: 15वीं शताब्दी में श्रीमंत शंकरदेव द्वारा।
- आधार: वैष्णव आस्था।
- स्रोत: 'सत्र' (वैष्णव मठ)।
- विष्णु की पौराणिक कथाओं का समावेश होता है।
- नाट्य शास्त्र (भरत मुनि) में वर्णित है।
- प्रेरणा: भक्ति आंदोलन।
- शास्त्रीय नृत्य के रूप में मान्यता: वर्ष 2000 में।

❖ पुरुष भिक्षुओं द्वारा समूह में किया जाता है जिसे 'भोकोट' के नाम से जाना जाता है

❖ **वाद्ययंत्र:**
- ढोल
- झाँझ (मंजीरा)
- बाँसुरी

अंकिया नाट

- सत्रिया का प्रकार।
- नाटक या नाट्य संगीत।
- भगवान श्रीकृष्ण की कथाएँ सुनाते हैं।
- इसे 'भौना' के नाम से भी जाना जाता है।
- ब्रजावली भाषा में लिखा है।

❖ **वेशभूषा:**
- पुरुष नर्तक
  - धोती
  - पगड़ी
- महिला नर्तक:
  - पारंपरिक असमिया आभूषण
  - घुरी (Ghuri)
  - चादोर (बेंकवत)

❖ **आधुनिक समय में सत्रिया की दो अलग-अलग धाराएँ:**
- गायन बायनार नाच।
- खरमार ना

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/sattriya-dance